तना जाल में
बायोकंट्रोल एजेंट (ब्युवेरिया बेसीआना)

विविल से कीट नाशक
फफुंद निकालरख हैं

तना जाल में
बायोकंट्रोल एजेंट (एनटीमोपेथीजिनिक सूत्रकृमी)

विविल से एनटोमोपेथोजिनिक
सूत्रकृमी निकाल रहा हैं

9. कीटों से पौधों को आगे बचाने के लिए केल के घेर को काटने के बाद पौधों को 2-4 डी से इंजेक्ट करें।
10. सडे हुए बेक्टीरिया को पौधो में डालें।
11. घेर के काटने के बाद उसका जो तना है उसे 30 से.मी के लंबाई में काटकर उसे तना जाल बनाने में उपयोग करें जिससे कीटों को पकडा जा सकता है।

विशेष जानकारी के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें

निदेशक
राष्ट्रीय केला अनुसंधान केन्द्र (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
तोगमलै रोड, तायनूर पोस्ट, तिरुच्चिराप्पल्ली - 620 102,
तमिलनाडु, भारत

प्रसार फलक हिन्दी-1

केले का तना बेधक कीट, *(ओडिपोरस लोंगीकोलीस)*

डॉ. बी.पद्मनाभन एवं डॉ. एम.एम.मुस्तफा

राष्ट्रीय केला अनुसंधान केन्द्र
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
तोगमलै रोड, तायनूर पोस्ट,
तिरुचराप्पल्ली - ६२० १०२, तमिलनाडु, भारत

भारत में तीस से भी ज्यादा केले के कीट रिपोर्ट किये गये है।उसमे *ओडीपोरस लोंगीकोलीस* मुख्य कीट है जिससे सबसे ज्यादा आर्थिक नुकसान हो रहा है।फसलों पर होने वाले कीटों के नाश पौधों के नुकसान की वृध्दि अवस्था पर निर्भर है ।

फैलाव :

तना बेधक कीट के कारण केले पर होने वाले नुकसान हर केला उत्पादन राज्य जैसे तमिलनाडु, केरला, आँध्र प्रदेश, कर्नाटका, उडीसा, प.बंगाल, बिहार, गोवा , पॉडीचेरी, आसाम और उत्तर-पूर्व पहाडी में पाये जाते है ।

लक्षण :

केले का तना बेधक कीट से पौधों कों नुकसान होता है।इससे तने के छिद्र से गोंदीय पदार्थ निकलना शुरू होता है। केले की वृद्धि अवस्था पर निर्भर होता है उसमें से निकलने वालो गोंदीय पदार्थ की क्षमता।आरंभ के लक्षण या पूर्ण तरह नष्ट हो जाने के बाद पहचानने के बजाय यह अच्छा होगा कि आपके खेत में एक लंबावत के आकार में तना जाल रखे जिसमें तना बेधक कीट उसकी ओर आकर्षित हो और उसमें फँस जाये।

पत्तों के शीथ पर तना विविल और ग्रब्स

तना पर कीटों के प्रकोप से गिरा हुआ पौधा

जीवन चक्र :

केले का तना बेधक कीट 5 माह पुराने पौधे को नष्ट करना शुरू करता है।मादा कीट छोटे इलीप्टीकल पीला पन लिये सफेद अंडे लीफ शीथ की कोशिकाओं में देती है।अंडों का लार्वा 5 -8 दिन में निकलकर 20 -24 दिन बाद प्युपा बन जाता है। यह पत्तों में छिद्र बना लेती है।प्युपा से 20-24 दिन बाद काले रंग का तना बेधक कीट निकलता है।

पत्तों के शीथ में दिखने वाले छिद्र से कीट के कारण हुए नुकसान का अंदाजा लगाया जा सकता है।

एकीकृत कीट प्रबंध (ऐ पी एम)

एकीकृत कीट प्रबंध से केले में पाये जाने वाले तना कीटों कों नियंत्रण में लाया जा सकता है।

1. प्रभावित एवं सूखी पत्तियों को काटकर निकाल देना चाहिए।
2. कटे हुए पत्तों के छोर को क्लोरोपैरिकोस (2.5 मि.लि/ली) औ 1 मि.लि चिपकने के धातु के साथ छिडकाव करें।
3. घेर को काटने के बाद पौधों को जमीन की सतह से काट कर कीटनाशक दवा जैसे कार्बारिल (2 ग्राम/लीटर) पानी में डालकर छिडकाव करके अंडो एवं कीटों को नष्ट कर देना चाहिए।
4. लंबावत कटा तना जाल तथा केले के ठुंठ पर चक्रजाल की सहायता से केले के तना कीट के व्यवहारों पर ध्यान रखना चाहिए।
5. तना जाल में फँसने वाले कीटों को जमा कर उन्हें रोज मारा जा सकता है।
6. पाँचवे महीने में क्लोरोपैरिफोस (2.5 मि.लि/ली) या कोई नीम के कीटनाशक दवाइयों से केला तना बेधक कीट का छिडकाव करे।
7. लंबावत कट तना जाल में 20 ग्रां कीट नाशक फफुंद (ब्युवेरिया बैसीयाना) या एन्टोमो पैथोजिनिक निमाटोड (हेरीरोरहॅबडीटीस) फैलाकर रखे ।

   यह जाल को केले के पौधे के पास ऐसा रखे ताकि कटा हुआ भाग भूमि की तरफ हो।फँसे हुए कीट को मारने की आवश्यकता नहीं।
8. एक बार अगर केले के पौधों को कीट लग जाता है तब स्टेम इंजक्शन अपना कर उसे काबू में लाया जा सकता है।स्टेम इंजेक्टर की सहायता से मोनोक्रोटोफस का घोल (350 मिली पानी में 150 मिली धोल डालकर) 2 से 4 फुर जमीन से उपर और 30 का ऐंगल दोनों बाजू लेकर उसका छिडकाव करें।फूल के आने के बाद इंजेक्शन देना नहीं चाहिए।इंजेक्शन की सुई 2 या 3 पत्तों के शीथ तक ही पहुँचे इसका धयान रखे और यह भी ध्यान रखे की पेड की बीच तक न पहुँचे ।

केले के ठँठ पर चक्र जाल

लंबावत कटा तना जाल